IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैथिलीशरण गुप्त जी के कविताओं में व्यक्त राष्ट्रीय भावना

– डॉ. कविता चांदगुडे
सह प्राध्यापिका
किटेल कला महाविध्यालय, धारवाड
कर्नाटक

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिंदी के श्रेष्ठ कवि, युगदृष्टा एंव राष्ट्र नायक हैं। वे भारतीय विचारधारा के पोषक, भारतीय संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रीयता के गायक हैं। गुप्तजी ने अपनी साहित्यिक जीवन में गध्य, पध्य, नाटक, मौलिक तथा आनुदित रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य को संपन्न किया है। इनमें दो महाकाव्य साकेत और जयभारत, बीस खंडकाव्य, सत्रह गीतिकाव्य, चार नाटक और गीतिनाट्य हैं। मौथिलीशरण जी की सभी रचनाएँ राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत हैं। वे भारतीय संस्कृति एंव इतिहास के परम भक्त हैं । किंतु अंधविश्वास एंव खोखली मान्यताओं के विरोधी रहे। वे मानवतावाद के प्रबल समर्थक रहे। राष्ट्रीयता उनकी नस-नस में भरी थी जो काव्य रूप में निखत होती रही। इसीलिए तो महात्मा गांधीजीने उन्हें १९३६ में मैथिली काव्य मानग्रंथ भेंट करते हुए उन्हें राष्ट्रकवि के रूप में संबोधित किया और कहा कि "वे हम लोगों के कवि हैं और राष्ट्र भर की आवश्यकता को समझकर लिखने की कोशिश कर रहे हैं। बुंदेलखंड में बैठा यह कवि समस्त राष्ट्र कि गति को पहचानकर लिखता रहा। उनकी सभी रचनाओं में देशभक्ति, राष्ट्रीयता, मानवता की रव गूंजती है।

राष्ट्र, राष्ट्रभाषा एंव राष्ट्र की एकता के लिए मैथिलीशरण गुप्त जी का योगदान महत्वपूर्ण है। गुप्त जी ने अपने साहित्यिक गुरु महावीरप्रसाद द्विवेदी के आग्रह पर आम जनता में प्रचलित खड़ीबोली को अपनी काव्यकला से अद्भुत काव्यभाषा के रूप में अपनाया। अपनी काव्यकला से खड़ीबोली को अद्भुत काव्यभाषा भी बनाया। हिंन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव देनेवालों में गुप्त जी अग्रणी रहे हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के 'निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' इस कथन में अटुट विश्वास रखते थे। गुप्तजी राष्ट्र की एकता, राष्ट्र के विकास, राष्ट्र की अस्मिता के लिए राष्ट्रभाषा का योगदान सर्वोपरि मानते थे। इसीलिए हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने पर जोर देते रहे। 'देवनागर' में इसकी तीव्रता दिखती है –

संपूर्ण प्रांतिक बोलियां सर्वत्र ज्योंकी तयों रहें सब प्रांत वासी प्रेम से उनके प्रवाहों में बहें। पर एक ऐसी मुख्य भाषा चाहिए होगी वहां सब देशवासी जन जिसे समझे समान जहां-तहां ।आधुनिक काल की एक और प्रमुख विचार राष्ट्रभक्ति रही है। भारतेंदु मंडली के अनेक कवि राष्ट्रभक्ति संबंधी कविताएं लिखते रहे। किंतु राष्ट्रभाति में गुप्तजी की सानी नहीं है। अपनी रचनाओं से समस्त देश में देश भक्ति, स्वदेश प्रेम को प्रस्फुटित करते रहे– जो भरा नहीं है भाव से जिसमें बहती रसधार नहीं। वह हाय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

गुप्त जी की राष्ट्रभक्ति १९०९ में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित मातृभूमि कविता से ही स्पष्ट होती है– **नीलाम्बर परिधान हरित पट सुंदर है**

सूर्य-चंद्र युग मुकुट मेखला रनाकर है।
नदियां प्रेम-प्रवाह फल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खगवृंद शैव फन सिंहासन हैं।
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेष की
हे मातृभूमि । तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।

मैथिलीशरण गुप्त जी अनेक क्रांतिधर्मी सेनानियों जैसे ल।ला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक, विपिनचंद्र पाल, गणेशचंद्र विध्यार्थी, मदनमोहन मालवीय आदि के संमर्ग में रहे। अतः गुप्त जी की 'अनघ' से पूर्व की रचनाओं में उनकी क्रांति की गूंज सुनाई देती है। बाद में महात्मा गांधी, राजेंद्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, विनोबा भावे आदि के संपर्क में आने से गांधीवाद के अनुयायी बने और अहिंसात्मक आंदोलनों का समर्थन किया। इसका कारण उनके वैष्णव संस्कार जो सर्वेजनः सुखिनो भवंतु या बौद्द धर्म के करुणा में भी उनका विश्वास रहा होगा। मैथिलीशरण गुप्त जी 'भारत भारती' १९१२ से राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्द हुए। राजा रामपालसिंह और रायकृष्णदास की प्रेरणा से हाली के मुसद्दस का अनुकरण करते हुए इसको लिखा। इसका विनय गीत तो राष्ट्रीय आंदोलन का घोषणा पत्र माना जाने लगा था। प्रभात फेरियों, राष्ट्रीय आंदोलनों, शिक्षा संस्थाओं, प्रातःकालीन प्रार्थनाओं में भारत-भारती के पद गावों नगरों में गाये जाने लगे। भारत भारती भारतीय साहित्य मे सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज है। इसमें गुप्तजी ने देशप्रेम को दर्शाते हुए वर्तमान और भविष्य की दुर्दशा से उबरने का प्रयास किया है। यह युगांतरी काव्य है, यह तीन भागों में बंटा है अतीत खंड, वर्तमान खंड और भविष्यत खंड। अतीत खंड भारत के - वैभवपूर्ण इतिहास का गौरवगान है। उस समय के दर्शन, धर्म, ज्ञान-विज्ञान और कला के माध्यम से जनता में स्वदेश प्रेम जगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया भारतीय संस्कृति की महिमा का वर्णन करते कहते हैं-

पाये प्रथम जिनसे जगत ने दार्शनिक संवाद हैं-
गौतम, कपिल, जैमिनी, पतंजली, व्यास और कणाद है।

वर्तमान खंड में देश की दुर्दशा का वर्णन कर कवि तिलमिलाकर कहते हैं कि-

हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर वे समस्याएं सभी ।
यध्यपि हमें इतिहास अपना प्राप्त पूरा नहीं ।

गुप्तजी विस्मृत इतिहास को याद कर फिरसे उस ऊंचाई को पाने का आग्रह करते हुए नवयुवकों को निष्क्रियता को त्यागने कहते हैं-

हे नवयुवाओ ! देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी,
हे मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सबसे जगमगी
दोगे न तुम तो कौन देगा देशोद्दार में?
देखो, कहां क्या हो रहा है आजकल संसार में?

भविष्यत खंड में इस समस्या का समाधान ढूंढने को कहते हुए हिंदुओं को देश को पुनर्स्थापित करने के लिए कहते हैं। इसकी अंतिम कविता जो विनयगीत के रूप में प्रसिद्द है जो तन-मन में ऊर्जा भर देनेवाली है। उस समय ऋतिकारियों के लिए यह जागरण गीत बन चुका था। इस गीत की तीव्रता इतनी थी कि नागपुर के जनरल अठारी ने इसे गाते हुए जुलूस निकाला तो मध्यप्रदेश सरकार ने विनय के गीत को जब्त कर दिया। यह गुप्तजी की देशभक्ति का परिचायक है -

इस देश को दीनबंधो! आप फिर अपनाइए,
भगवान ! भारतवर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइए,
जड-तुल्य जीवन आज इसका विघ्न बाधा पूर्ण है,
हे रम्बा ! अब अवलंब देकर विघ्नहर कहलाइए ।

मैथिलीशरण गुप्त बराबर देश की राजनीति में होते बदलाओं को आंकते रहे। वे युगदृष्टा थे, गांधी जी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय होने से पूर्व ही १९१५ में गांधी जी पर 'अफ्रिका प्रवासी भारतवासी' को लिखकर सूचित कर दिया कि आगामी राष्ट्रीय आंदोलन का कर्णधार कौन होगा ।मैथिलीशरण गुप्त स्वतंत्रता आंदोलन के साक्षी रहे । वे मात्र दर्शक बन उसको लिपिबद्द नहीं किया वरन् अनेक आंदोलनों में भाग लिया और जेल भी गए। 'स्वदेश संगीत' में भारतीयों को सत्याग्रह के लिए आह्वानित किया। उन्होंने गांधी जी के आहिंसात्मक आंदोलनों का खूब प्रशंसा किया है।

- अस्थिर किया टोपवालों को गांधी टोपीवालों ने
शस्त्र बिना संग्राम किया है, इन माई के लालों ने।

जेल यात्रा के दौरान अनेक स्वतंत्र सेनानियों के संपर्क में आए जिससे उनकी राष्ट्रीयता का स्वर और अधिक तीव्र होने लगा। वहीं रहकर साहित्य की साधना करते रहे। 'अजित' खंडकाव्य में मार्कर्स और लेनिन के क्रांतिमार्ग और गांधीजी के अहिंसात्मक मार्ग की तुलना किया है। गुप्तजी की राष्ट्रीयता उत्तरोत्तर मानवतावाद में बदलने लगी। हिंदू धर्म के प्रति

अपार श्रद्दा होते हुए भी राष्ट्र की एकता के लिए धर्म, जाति आदि के बंधनों से ऊपर उथा गए। हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। विविध धर्मों, संप्रदायों, मतों और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता एवं समन्वय की भावना उनके काव्यों की विशेषता है। उनकी राष्ट्रीयता का परिचय 'राजा-प्रजा' पुस्तक से स्पष्ट होती है। गुप्त जी ने स्वतंत्र भारत में भी सांसद के रूप में कार्य करते हुए देश की सेवा किया।

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी के शिरोमणी कवि, सच्चे देशभक्त, भारतीय संस्कृति के ज्ञाता, राष्ट्रभाषा के निर्माता, मानवता के समर्थक रहे हैं। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्र कवि हैं क्योंकि ऐसा कोई भारतीय साहित्य का काल नहीं जिस पर गुप्त जीने लिखा न हो ।उनके साहित्य में समूचा भारत ही प्रतिबंधित होती दिखाई देती है। उनकी देशभक्ति भावना, राष्ट्रभाषा प्रेम अविस्मरणीय रही है। वे युग धर्मी, युगददृष्टा और युगांतरकारी है। अपनी भाष और विशिष्ट शैली शिल्प के द्वारा समकालीन एवं आगामी हिंदी कवियों का दिशा निर्देश किया है।

आधार ग्रंथ-

१. डॉ. प्रभाकर माचवे,मैथिलीशरण गुप्त राजपाल एड सन्जप्रकाशन, दिल्ली, १९

२. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त को काव्ययात्रा साहित्य सम इलाहाबाद, १९८६

३. डॉ. श्यामला कान्त वर्मा, कवि समीक्षा, संजय बुक सेंटर वारणाली २०००